अष्टावक्र गीता –

हे जनक , हर जन्म में तुमने धन कमाया , काम का भी भोग किया एवं धार्मिक कार्य भी किये पर इनसे तुम्हें कभी संतुष्टी नहीं हुई यदि इनमें सुख होता तो तुम्हें शांति प्राप्त हो जाती ।

विपत्ती एवं सम्पत्ति दैवयोग से ही समय पर आती –जाती है । जो व्यक्ति यह जान जाता है वह संतुष्ट रहता है और उसकी इंद्रियां स्वस्थ रहती है । वह न कामना करता है और न ही शोक करता है ।

मित्र , खेत , धन, मकान, स्त्री , भाई एवं इन्द्रीय सुख ये सभी क्षणिक सुख महसूस कराते है । चिर शांति नहीं चिर शांति ही आनन्द है । वही परमानन्द तक पहूंचने का मार्ग है । चित्त में विचारों का प्रवाह रूकते ही चिर शांति स्थापित होजाती है । शरीर ,मन ,वाणी , एवं विचारों का प्रवाह रूकते ही शांति एवं आनन्द स्थापित हो जाता है ।

जिसने आत्मा को जानलिया उसने परमात्मा को जानलिया ,परमात्मा आत्माओं में श्रेष्ठ है । आत्माज्ञानी सदैव यह महसूस करता है सब कुछ वही है या वह है ही नहीं ।

संसार में लोग आत्मा को जानने के लिए अनेक प्रकार के अभ्यास जैसे :– योग ,साधना, सन्यास आदि करते है । पर ये लोग असफल रहते है क्योंकि इन अभ्यासों से अहंकार बढ़ता है और चित्त की वृत्तियां शांत होने के बजाय विद्रोह करती है । अभ्यास से वृत्तियां और दृढ़ हो जाती है । जिससे अभ्यास भी बंधन बन जाता है । इससे व्यक्ति को शुद्व, बुद्व, प्रिय , पूर्ण , प्रपंचरहित , दुःख रहित आत्मा को जानने में व्यवधान होता है ।

हे राजन , अहंकार छोड़ो और अपना मन मुट्ठी में पकड़ो । यह मन न तो भोगने से शांत होता है और न ही विषयों को त्यागने से , यह तो मनन छोड़ने से शांत होता है । आत्मज्ञानी न तो सिद्वान्तों में जीता है और न ही आदतों में वह स्वभाव रहित हो जाता है । वह यह भी चिंतन नहीं करता कि विषय भोग की इच्छा समाप्त हुई या नहीं ।

शास्त्रीय ज्ञान ,जप,तप योग आदि मनुष्य की आत्मज्ञान प्राप्ति में योग्यता बढ़ाने में सहायक होते है । पर जब आत्म ज्ञान प्राप्ति का अवसर आता है तो इनका कोई उपयोग नहीं होता है । ज्ञान के समय एवं उसके पश्चात इनको छोड़ना जरूरी होता है । केवल बोध ही आत्मज्ञान में सहायक होता है । परन्तु शास्त्रीय ज्ञान एवं कर्मकाण्ड को यदि आत्मज्ञान प्राप्ति में अनुपयोगी मानकर समाप्त करदिया जाए तो ब्राह्मण बेरोजगार हो जाएंगे एवं सामाजिक आचार–विचार पर उनका नियंत्रण समाप्त हो जाएगा और सामाजिक व्यवस्था चरमरा जाएगी ।

यह संसार अपनी गति से चल रहा है और हम सभी निमित्त मात्र है । जो हो रहा है उसका नियंता कोई ओर है अतः अपने को कर्ता या दोषी मानकर कभी विचलित न हो । गाय जिस प्रकार हजारों बछड़ों में से अपना बछड़ा पहचान कर दूध पिलाती है उसी प्रकार भाग्य भी हजारों लोगों में से व्यक्ति को पहचान कर उसे उसी स्थान पर प्रारब्धानुसार अच्छा या बुरा फल समय पर प्रदान करता है ।

हे राजन आत्म ज्ञान की पात्रता के लिए अहंकार से मुक्ति , पूर्ण सर्मपण (गुरू एवं उपदेश के प्रति) शरीर और मन के भावों की मुक्ति , शास्त्र एवं अन्य प्रकार के ज्ञान से मुक्ति और सभी प्रकार के ब्रह्म उपादानों से मुक्ति आवश्यक है ।

आत्मज्ञानी अपने स्वभाव में ही स्थित रहता है । उसे बदलने का प्रयास नहीं करता ,उसके अनुसार सहज कर्म कर लेता है ।